आगम-अनुयोग

भाग-1

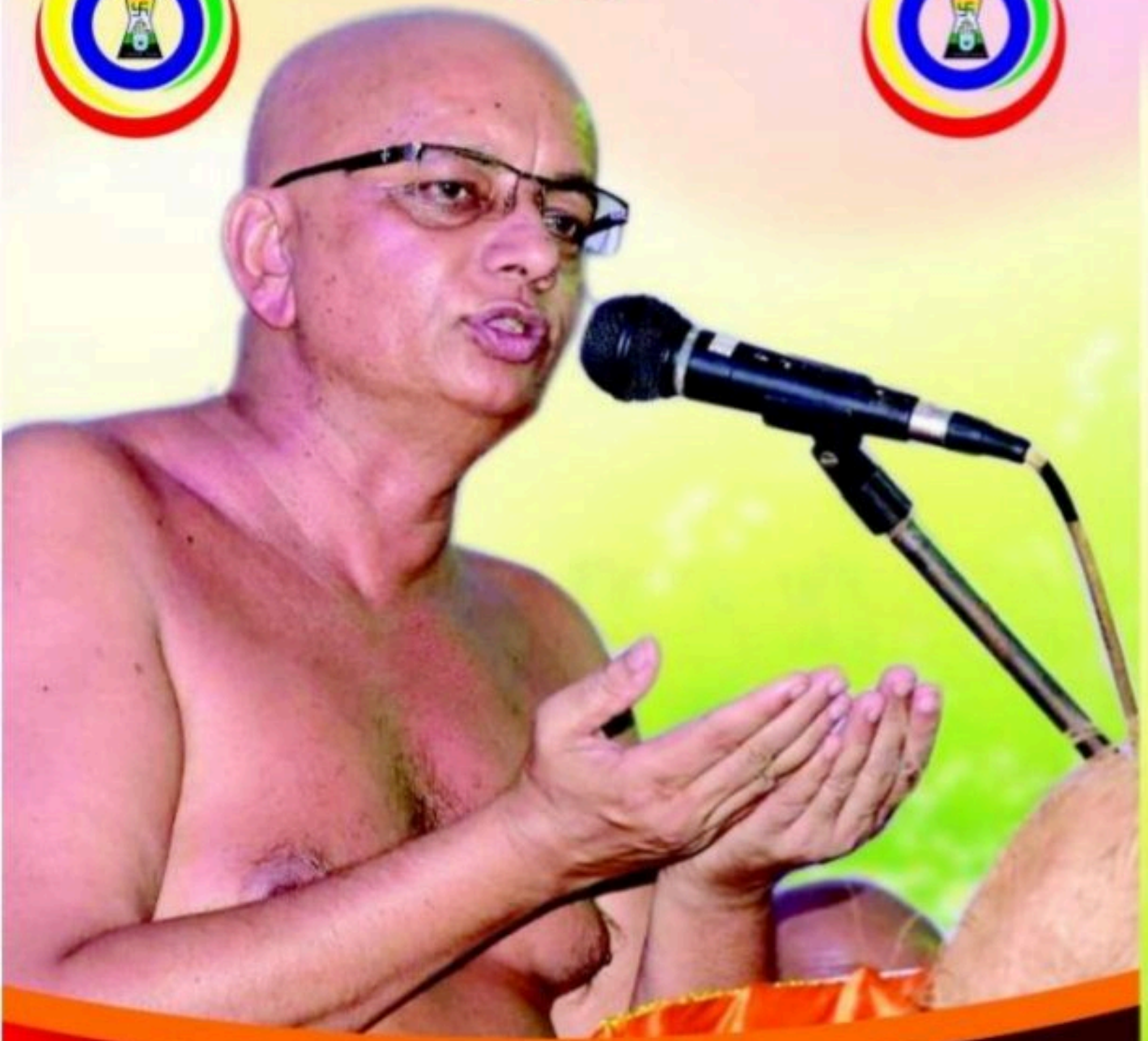

रचयिता-आचार्यश्री 108 आर्जवसागर

सम्यग्ज्ञान भूषण पदवी हेतु शिविर का आयोजन

आगम अनुयोग प्रश्नोत्तर प्रदीप

मंगल आशीर्वाद एवं प्रेरणा- आचार्य गुरुदेव श्री आर्जवसागर जी महाराज

जैन ग्रंथों का संपूर्ण सार : आगम-अनुयोग

आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित परम पूज्य आध्यात्म योगी आचार्य गुरुदेव श्री आर्जवसागरजी महाराज ने मोक्षमार्गोपयोगी अनेक बहुमूल्य कृतियों की रचना की है; जिनमें 'आगम-अनुयोग' एक ऐसी अनूठी, अद्वितीय (Unique)कृति है, जिसमें जैन धर्म के चारों अनुयोगों (प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग एवं द्रव्यानुयोग) रूप ग्रंथों का सार समाहित है। यह बहुमूल्य कृति स्वाध्याय प्रेमी श्रावकों के लिये अत्यंत मूल्यवान एवं बहुउपयोगी है। इसके माध्यम से आचार्यश्री ने जैन आगम की, लोक-अलोक की विस्तृत जानकारी का समावेश इसमें किया गया है। यह कृति प्रश्नोत्तरी रूप में अत्यंत सरल शब्दों में लिखित है। इसके माध्यम से सम्यग्ज्ञान भूषण, सिद्धांत भूषण पदवी की उपाधि भी प्राप्त हो सकती है। आगम अनुयोग (प्रश्नोत्तर प्रदीप) का मुख्य उद्देश्य भव्यजीवों को स्वाध्याय के माध्यम से आगम ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त कराना है।

गुरुवर की यह अनूठी कृति संपूर्ण जैन दर्शन को बताने वाली है एवं अत्यंत सरल शब्दों में आगम ग्रन्थों का मुख्य ज्ञान कराने वाली है। हम सभी का परम सौभाग्य है कि हमें गुरुवर रचित इस 'आगम-अनुयोग' कृति को पढ़ने का, इसका स्वाध्याय करने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

'आगम-अनुयोग' कृति में करीब 1274 प्रश्नोत्तरों के माध्यम से प्रथमानुयोग एवं करणानुयोग का विशेष वर्णन किया है।

त्रेसठ (63) शलाका पुरुषों, कुलकरों आदि महापुरुषों संबंधी पुराणों का संपूर्ण सारांश 'आगम-अनुयोग' में प्रथमानुयोग में लगभग 404 प्रश्नों में समाहित है। यह प्रथमानुयोग का ज्ञान भव्यों के लिये अत्यंत उपकारी है। इसके ज्ञान से जीवों को सम्यग्दर्शनादि रूप बोधि और धर्मध्यान, शुक्लध्यान रूप समाधि की प्राप्ति होती है। इसी अनुयोग में भोगभूमि-कर्मभूमि की व्यवस्था, पुरुषार्थ की भी विस्तृत विवेचन है।

आचार्य गुरुदेव ने 63 शलाका पुरुषों में भी सर्वप्रथम तीर्थंकर महापुरुषों का वर्णन किया है कि तीर्थंकर कौन होते हैं? किस तरह तीर्थंकर प्रकृति का संचय होता है? भरत क्षेत्र, विदेह क्षेत्र संबंधी कितने-कितने तीर्थंकर होते हैं? किस तरह सौधर्मेन्द्र-शचि इन्द्राणि प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव प्रभु का जन्मोत्सव मनाते हैं? किस कारण से उन्हें वैराग्य होता है? किस तरह अयोध्या की रचना होती है? कैसे उन्हें केवलज्ञान प्राप्त होता है? और उनका समवशरण कितना विशाल विस्तार वाला होता है? कौन से जीव उस समवशरण में उनकी दिव्यध्वनि रूप उपदेश को ग्रहण करते हैं? आदि विशेष शंकाओं का समाधान इस प्रथमानुयोग खण्ड में प्रश्नोत्तर के माध्यम से किया गया है। तीर्थंकरों के विशेष वर्णन के बाद चक्रवर्ती और उनका वैभव आदि एवं बलदेव, नारायण, प्रतिनारायण, कामदेव आदि महापुरुषों का भी उल्लेख इसमें समाहित है।

करणानुयोग का वर्णन भी प्रश्न 405 से लेकर 1274 प्रश्न तक किया गया है, जिसमें विशेष रूप से तीन लोक का वर्णन समाहित है। अर्थात् लोक-अलोक का विभाग, गणित, उसकी रचना एवं उसमें जीवों का निवास, युग परिवर्तन, प्ररूपणा आदि का ज्ञान प्राप्त कराने वाला यह करणानुयोग खण्ड है। तीन लोक (ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक) के वर्णन में अधोलोक में नरकादि एवं उनके पटलों का विस्तार, वहाँ का वातावरण, नरक के दुःख वहाँ उत्पन्न होने वाले जीवों की लेश्या, नरकों की आयु एवं वहाँ कौन से जीव किस कारण से जन्म लेते हैं आदि का भी मुख्यतः से वर्णन किया गया है। मध्यलोक में भी युग परिवर्तन, कल्पकाल, उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल आदि का भी विशेष वर्णन है। एवं देवों की विस्तृत जानकारी भी इसमें समाहित है। (सर्वद्वीप और समुद्र, उनपर स्थित पर्वतों का, भोगभूमि-कर्मभूमि की व्यवस्था का, अकृत्रिम चैत्यालयों का भी विशेष वर्णन प्रश्नोत्तरों के माध्यम से किया गया है।)

यह 'आगम-अनुयोग' प्रश्नोत्तर-प्रदीप हम भव्य जीवों को कल्याणकारी रूप है यह कृति मोक्ष रूपी पद (शिवालय) को शीघ्र ही प्रदान करायेगी।

जिनके दर्शन से नयन धन्य हो जाते हैं, जिनको आहार दान देने से हाथ धन्य हो जाते हैं, जिनका सुमरण करने से मन धन्य हो जाता है, जिनका गुणगान करने से कण्ठ धन्य हो जाता है, जिनके पास जाने से जीवन धन्य हो जाता है। ऐसे आगम-अनुयोग ग्रन्थ के प्रणेता परमोपकारी, धर्म प्रभावक, षोडशकारण व्रत प्रणेता, मोक्षमार्ग उपदेशक, आध्यात्मिक संत आचार्य गुरुदेव श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के चरणों में बारंबार नमोस्तु.... नमोस्तु.... नमोस्तु।

इंजी. चहिन ऋषिका जैन, दमोह

दिनांक- 3 मई से 2 जून 2022 तक

आयोजक- गुरु आर्जव वाणी एवं भाव विज्ञान परिवार, भोपाल

करणानुयोग

अध्याय - 5. जैन गणित-विज्ञान

प्र.405 करणानुयोग किसे कहते हैं?

उत्तर जिस अनुयोग में लोक अलोक का विभाग, गणित, जगत् का माप, लोक-रचना, जीवों का निवास, आयु उत्सेधादि, युग-परिवर्तन और प्ररूपणाओं का वर्णन होता है, उसे करणानुयोग कहते हैं।

प्र.406 लोक और अलोक किसे कहते हैं?

उत्तर जहाँ जीव, पुद्गलादिक द्रव्य पाये (देखे) जाते हैं उसे लोक तथा जहाँ जीवादिक द्रव्य नहीं देखे जाते उसे अलोक कहते हैं।

प्र.407 गणित में परिकर्माष्टक किन्हें कहते हैं?

उत्तर संकलन, व्यवकलन, गुणकार, भागहार, वर्ग, वर्गमूल, घन और घनमूल इन अष्ट प्रकारों को परिकर्माष्टक कहते हैं।

प्र.408 संकलन क्या कहलाता है?

उत्तर लोक में संख्या को आपस में जोड़ना संकलन कहलाता है। जैसे- दो और दो चार होते हैं।

प्र.409 व्यवकलन किसे बोलते हैं?

उत्तर लोक में जिसे घटाना या बाकी निकालना बोला जाता है उसे आगम भाषा में व्यवकलन बोलते हैं।

प्र.410 गुणकार किसे कहते हैं?

उत्तर गुणा करने का नाम गुणकार होता है। जैसे- चार को दो से गुणा करने पर आठ होता है।

प्र.411 भागहार क्या कहलाता है?

उत्तर भाग देने का नाम भागहार कहलाता है। जैसे- चार में दो का भाग देने से दो लब्ध प्राप्त होता है।

प्र.412 वर्ग किसे कहते हैं?

उत्तर समान दो राशियों का परस्पर में गुणा करने का नाम वर्ग है। जैसे- दो को दो से गुणा करने चार होता है। इस तरह दो का वर्ग चार है। वर्ग का एक नाम कृति भी है।

प्र.413 घन किसे कहते हैं?

उत्तर समान तीन राशियों को परस्पर में गुणा करने का नाम घन है। जैसे- चार को तीन जगह रखकर परस्पर गुणा करने से चौंसठ होता है। तब चार का घन चौंसठ हुआ।

प्र.414 वर्गमूल किसे कहते हैं?

उत्तर जिसका वर्ग करने से जो राशि उत्पन्न होती है उसे उस राशि का वर्गमूल कहा जाता है। जैसे-दो का वर्ग करने से चार राशि उत्पन्न होती है। तब दो यह संख्या चार का वर्गमूल कहलाता है।

प्र.415 घनमूल किसे कहते हैं?

उत्तर जो राशि जिसका घन करने से उत्पन्न होती है उस राशि का वह घनमूल होता है। जैसे- चार का घन

करने से चौसठ राशि उत्पन्न होती है, अत: चौसठ का घनमूल चार होता है।

प्र. 416 क्षेत्रफल किसे कहते हैं?

उत्तर लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई से जहाँ दो की विवक्षा हो, एक की न हो उसे प्रतर क्षेत्र या वर्ग रूप क्षेत्र कहते हैं और लम्बाई को चौड़ाई से गुणा करने पर जो फल आता है उसे क्षेत्रफल कहते हैं। जैसे- चार हाथ लम्बे और पाँच हाथ चौड़े क्षेत्र का क्षेत्रफल बीस हाथ होता है।

प्र. 417 घन क्षेत्रफल किसे कहते हैं?

उत्तर जहाँ लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई तीनों की विवक्षा हो उसे घन क्षेत्र कहते हैं और उसके क्षेत्रफल को घन क्षेत्रफल या खातफल कहते हैं। जैसे- चार हाथ लम्बे, चार हाथ चौड़े और पाँच हाथ ऊँचे क्षेत्र का खात फल $4 \times 4 \times 5 = 80$ हाथ हुआ।

प्र. 418 व्यास या परिधि किसे कहते हैं?

72 / 196

उत्तर गोलाकार क्षेत्र के बीच में जितना विस्तार होता है उसे व्यास कहते हैं और गोल प्रमाण को परिधि कहते हैं।

प्र. 419 परिधि और क्षेत्रफल का नियम क्या है?

उत्तर सामान्य रूप से व्यास से तिगुणी परिधि होती है और परिधि को व्यास की चौथाई से गुणा करने पर क्षेत्रफल होता है तथा क्षेत्रफल को ऊँचाई या गहराई से गुणा करने पर खातफल होता है।

प. 420 मान के कितने भेद हैं?

उत्तर मान के दो भेद हैं- लौकिक मान और लोकोत्तर मान।

प्र. 421 लौकिक मान किसे कहते हैं?

उत्तर लोक में प्रचलित मान को लौकिक मान कहा जाता है। उसके छ: भेद हैं- मान, उन्मान, अवमान, गणिमान, प्रतिमान और तत्प्रतिमान। अन्न-धान्य आदिक के माप करने के बरतनों आदिक को मान कहते हैं। तराजू को उन्मान कहते हैं। चुल्लू आदिक को अवमान कहते हैं। जैसे- एक चुल्लू जल इत्यादि। एक आदि को गणिमान कहते हैं। जैसे- एक, दो, तीन। गुंजा आदि को प्रतिमान कहते हैं। जैसे- रत्ती, मासा आदि। घोड़े की लम्बाई आदिक देखकर उसका मूल्य आँकना तत्प्रतिमान कहलाता है।

प्र. 422 लोकोत्तर मान के कितने भेद हैं?

उत्तर लोकोत्तर मान के चार भेद हैं- द्रव्यमान, क्षेत्रमान, कालमान और भावमान।

प्र. 423 द्रव्यमान जघन्य और उत्कृष्ट किस रूप में होता है?

उत्तर एक परमाणु जघन्य द्रव्यमान है और सर्व द्रव्यों का समूह उत्कृष्ट द्रव्यमान है।

प्र. 424 क्षेत्रमान जघन्य और उत्कृष्ट किस रूप में रहता है?

उत्तर एक प्रदेश जघन्य क्षेत्रमान है और समस्त आकाश उत्कृष्ट क्षेत्रमान है।

प्र. 425 कालमान जघन्य और उत्कृष्ट किस रूप में होता है?

उत्तर एक समय जघन्य कालमान है और सर्वकाल उत्कृष्ट कालमान है।

प्र. 426 भावमान जघन्य और उत्कृष्ट रूप में किस तरह होता है?

उत्तर सूक्ष्म निगोदिया लब्ध्यपर्याप्तक जीव का पर्याय श्रुतज्ञान जघन्य भावमान है और केवलज्ञान उत्कृष्ट भावमान है।

प्र. 427 द्रव्यमान के कितने भेद होते हैं?

उत्तर द्रव्यमान के दो भेद होते हैं- संख्यामान और उपमामान।

प्र. 428 संख्यामान के कितने भेद हैं?

उत्तर संख्यामान के तीन भेद हैं- संख्यात, असंख्यात और अनन्त।

प्र. 429 संख्यात, असंख्यात और अनन्त के उदाहरण क्या है?

उत्तर जो संख्या पाँचों इन्द्रियों का विषय है वह संख्यात है। संख्यात के ऊपर जो संख्या अवधिज्ञान का विषय है वह असंख्यात है। तथा असंख्यात के ऊपर जो संख्या केवलज्ञान के विषय भाव को प्राप्त होती है वह अनन्त है।

प्र. 430 क्षय सहित या अन्त होने वाले (अर्धपुद्गल परिवर्तन) काल को भी अनन्त कहा जा सकता है क्या?

उत्तर हाँ! क्षय सहित होने वाला ऐसा काल इसलिए अनन्त (परीतानन्त) कहा जाता है क्योंकि छद्मस्थ जीवों के द्वारा उसका अन्त नहीं पाया जाता है।

प्र. 431 उपमामान के कितने भेद हैं?

उत्तर उपमामान के आठ भेद हैं- पल्य, सागर, सूच्यंगुल, प्रतरांगुल, घनांगुल, जगच्छ्रेणी, जगत्प्रतर और लोक।

प्र. 432 पल्य किसे कहते हैं?

उत्तर भूमि के गहरे गड्ढे को पल्य कहते हैं। उस पल्य के आधार से परिगणित काल को पल्य या पल्योपम कहा जाता है।

प्र. 433 पल्य यह संज्ञा कितने वर्षों की उपमा के लिए प्रयुक्त होती है?

उत्तर पल्य यह संज्ञा असंख्यात वर्ष के लिए प्रयुक्त होती है।

प्र. 434 असंख्यात वर्ष तक की संख्या तक पहुँचने के लिए कितनी संख्याओं को पार करना पड़ता है?

उत्तर असंख्यात तक पहुँचने के लिए समय आवली आदि से लेकर अट्ट तक की संख्याओं को पार करना पड़ता है।

प्र. 435 समय किसे कहते हैं?

उत्तर मंदगति से एक परमाणु को आकाश के एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश तक जाने में जितना काल लगता है उसे समय कहते हैं। यह काल की इकाई (सबसे जघन्य अवस्था) है।

प्र. 436 आवली किसे कहते हैं?

उत्तर असंख्यात समयों की एक आवली कही जाती है।

प्र. 437 उच्छ्वास किसे कहते हैं?

उत्तर संख्यात आवलियों का एक उच्छ्वास होता है।

प्र. 438 स्तोक किसे कहते हैं?

उत्तर सात उच्छ्वासों का एक स्तोक होता है।

प्र. 439 लव किसे कहते हैं?

उत्तर सात स्तोकों का एक लव होता है।

प्र. 440 घड़ी (घटी) या नाली किसे कहते हैं?

उत्तर 38 1/2 लव (24 मिनट) की एक घड़ी होती है।

प्र. 441 मुहूर्त्त किसे कहते हैं?

उत्तर दो घड़ी का एक मुहूर्त्त होता है।

प्र. 442 अन्तर्मुहूर्त्त किसे कहते हैं?

उत्तर एक समय से ऊपर तथा मुहूर्त्त से एक समय न्यून को अन्तर्मुहूर्त्त कहते हैं।

प्र. 443 दिन-रात किसे कहते हैं?

उत्तर तीस मुहूर्त्त (24 घण्टों) का एक दिनरात होता है। इसे अहोरात्र भी कहते हैं।

प्र. 444 पक्ष किसे कहते हैं?

उत्तर पन्द्रह दिनरात का एक पक्ष होता है।

प्र. 445 माह किसे कहते हैं?

उत्तर दो पक्षों का एक माह या मास होता है।

प्र. 446 ऋतु किसे कहते हैं?

उत्तर दो माह की एक ऋतु होती है।

प्र. 447 अयन किसे कहते हैं?

उत्तर तीन ऋतुओं का एक अयन होता है या षण्मासिक एक अयन होता है।

प्र. 448 वर्ष किसे कहते हैं?

उत्तर दो अयनों का एक वर्ष होता है।

प्र. 449 युग किसे कहते हैं?

उत्तर पाँच वर्ष का एक युग होता है।

प्र. 450 पूर्वाङ्ग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख वर्षों का एक पूर्वाङ्ग होता है।

प्र. 451 पूर्व किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख पूर्वाङ्गों का एक पूर्व होता है।

प्र.452 पर्वाङ्ग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी पूर्वों का एक पर्वाङ्ग होता है।

प्र.453 पर्व किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख पर्वाङ्गों का एक पर्व होता है।

प्र.454 नयुताङ्ग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी पर्वों का एक नयुताङ्ग होता है

प्र.455 नयुत किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख नयुताङ्गों का एक नयुत होता है।

प्र.456 कुमुदाङ्ग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी नयुतों का एक कुमुदाङ्ग होता है।

प्र.457 कुमुद किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख कुमुदाङ्गों का एक कुमुद होता है।

प्र.458 पद्माङ्ग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी कुमदों का एक पद्माङ्ग होता है।

प्र.459 पद्म किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख पद्माङ्गों का एक पद्म होता है।

प्र.460 नलिनाङ्ग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी पद्मों का एक नलिनाङ्ग होता है।

प्र.461 नलिन किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख नलिनाङ्गों का एक नलिन होता है।

प्र.462 कमलाङ्ग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी नलिनों का एक कमलाङ्ग होता है।

प्र.463 कमल किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख कमलाङ्गों का एक कमल होता है।

प्र.464 त्रुटितांग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी कमलों का एक त्रुटितांग होता है।

प्र.465 त्रुटित किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख त्रुटितांगों का एक त्रुटित होता है।

प्र.466 अटटांग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी त्रुटितों का एक अटटांग होता है।

प्र.467 अटट किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख अटटांगों का एक अटट होता है।

प्र. 468 अममांग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी अटटों का एक अममांग होता है।

प्र. 469 अमम किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख अममांगों का एक अमम होता है।

प्र. 470 हाहांग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी अममों का एक हाहांग होता है।

प्र. 471 हाहा किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख हाहांगों का एक हाहा होता है।

प्र. 472 हूहूअंग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी हाहा का एक हूहूअंग होता है।

प्र. 473 हूहू किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख हूहूअंगों का एक हूहू होता है।

प्र. 474 लतांग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी हूहू का एक लतांग होता है।

प्र. 475 लता किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख लतांगों को एक लता कहते हैं।

प्र. 476 महालतांग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लताओं को एक महालतांग कहते हैं।

प्र. 477 महालता किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख महालतांगों को एक महालता कहते हैं।

प्र. 478 शीर्षप्रकंपित किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी महालता को एक शीर्षप्रकंपित कहते हैं।

प्र. 479 हस्तप्रेलित किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख शीर्षप्रकंपित को एक हस्तप्रेलित कहते हैं।

प्र. 480 अचलात्म किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी हस्तप्रेलित को एक अचलात्म कहते हैं।

प्र. 481 पल्य के कितने भेद हैं?

उत्तर पल्य के तीन भेद हैं- व्यवहारपल्य, उद्धारपल्य और अद्धापल्य।

प्र. 482 प्रथम पल्य के साथ व्यवहार यह संज्ञा क्यों पड़ी?

उत्तर उद्धारपल्य और अद्धापल्य व्यवहार मूल होने से प्रथम पल्य का नाम व्यवहार पल्य पड़ा।

प्र. 483 द्वितीय पल्य के साथ उद्धार यह संज्ञा क्यों पड़ी?

उत्तर द्वितीय पल्य की संज्ञा उद्धार पल्य होने का कारण उससे उद्धृत निकाले गये रोमों के आधार से द्वीप और समुद्रों की गणना की जाती है।

प्र. 484 तृतीय पल्य की संज्ञा अद्धा पल्य क्यों पड़ी?

उत्तर अद्धा; काल को कहते हैं अत: इससे मनुष्य, तिर्यञ्च, नारकी और देवादिक की आयु मापी जाती है।

प्र. 485 व्यवहार पल्य किसे कहते हैं?

उत्तर प्रमाणांगुल से मापे गये योजन बराबर लम्बे-चौड़े और गहरे अर्थात् दो हजार कोस गहरे और दो हजार कोस चौड़े गोल गड्ढे में एक दिन से लेकर सात दिन तक के जन्मे हुए मेढे के बालों को कैंची से ऐसा काटकर कि जिसे फिर काटा न जा सके, खूब ठोककर भर दो। यह व्यवहार पल्य है। सौ-सौ वर्ष में एक रोम निकालने पर जितने समय में वह गड्ढा खाली हो उतने काल को व्यवहार-पल्योपमकाल कहते हैं।

प्र. 486 उद्धार पल्य किसे कहते हैं?

उत्तर व्यवहार पल्य के प्रत्येक रोम के बुद्धि द्वारा इतने टुकड़े करो कि जितने असंख्यात कोटि वर्ष के जितने समय होते हैं और उन्हें दो हजार कोस गहरे और दो हजार कोस चौड़े गोल गड्ढे में भर दो। उसे उद्धार पल्य कहते हैं। उसमें से प्रति समय एक-एक रोम निकालने पर जितने समय में वह खाली हो उतने काल को उद्धार पल्योपम कहते हैं।

प्र. 487 अद्धापल्य किसे कहते हैं?

उत्तर उद्धार पल्य के प्रत्येक रोम के पुन: इतने टुकड़े करो कि जितने सौ वर्ष में जितने समय होते हैं और उन्हें पूर्वोक्त प्रमाण गड्ढे में भर दो। उसे अद्धापल्य कहते हैं। उसमें से प्रति समय एक-एक रोम निकालने पर जितने समय में वह गड्ढा खाली हो उतने काल को अद्धापल्योपम कहते हैं।

प्र. 488 सागर किसे कहते हैं?

उत्तर दस कोड़ा-कोड़ी व्यवहार पल्यों का एक व्यवहार सागरोपम, दस कोड़ाकोड़ी उद्धार पल्यों का एक उद्धार सागरोपम और दस कोड़ाकोड़ी अद्धापल्यों का एक अद्धा सागरोपम होता है।

प्र. 489 सूच्यंगुल किसे कहते हैं?

उत्तर अद्धापल्य के जितने अर्द्धच्छेद हों उतनी जगह अद्धापल्य को रखकर परस्पर में गुणा करने पर जो राशि उत्पन्न हो उतने आकाश प्रदेशों की मुक्तावली (मोतियों की पंक्ति सदृश) करने पर एक सूच्यंगुल होता है। अर्थात् एक अंगुल लम्बे प्रदेशों का प्रमाण एक सूच्यंगुल कहलाता है।

प्र. 490 अर्द्धछेद किसे कहते हैं?

उत्तर किसी राशि के आधा-आधा होने के वारों को अर्द्धच्छेद कहते हैं। अर्थात् जो राशि जितनी बार समरूप से आधी-आधी हो सकती है उसके उतने ही अर्द्धच्छेद होते हैं। जैसे- सोलह के अर्द्धच्छेद चार होते हैं क्योंकि सोलह राशि चार बार आधी-आधी हो सकती है-८, ४, २, १।

प्र. 491 प्रतरांगुल किसे कहते हैं?

उत्तर सूच्यंगुल के वर्ग को प्रतरांगुल कहते हैं।

प्र. 492 घनांगुल किसे कहते हैं?

उत्तर सूच्यंगुल के घन को घनांगुल कहते हैं। वह घनांगुल एक अंगुल लम्बे, एक अंगुल चौड़े और एक अंगुल ऊँचे स्थल स्थित प्रदेशों का परिमाण जानना।

प्र. 493 अंगुल के कितने भेद है?

उत्तर अंगुल के तीन भेद हैं- उत्सेधांगुल, प्रमाणांगुल और आत्मांगुल।

प्र. 494 उत्सेधांगुल किसे कहते हैं?

उत्तर आठ यव मध्यों (जौ के बीच के भागों) का एक उत्सेधांगुल होता है।

प्र. 495 यवमध्य किसे कहते हैं?

उत्तर आठ जूं का एक यवमध्य होता है।

प्र. 496 एक जूँ का प्रमाण क्या है?

उत्तर आठ लीख प्रमाण एक जूँ है।

प्र. 497 एक लीख कितने प्रमाण होती है?

उत्तर कर्म-भूमिज-मनुष्य सम्बंधी केश के अग्रभाग से आठ गुने प्रमाण एक लीख होती है।

प्र. 498 कर्म-भूमिज-मनुष्य से सम्बंधित केश के अग्र-भाग का प्रमाण कितना है?

उत्तर जघन्य-भोग-भूमिज-मनुष्य सम्बन्धी केश के अग्र-भाग से आठ गुने प्रमाण कर्म-भूमिज-मनुष्य से सम्बन्धित केश का अग्रभाग होता है।

प्र. 499 जघन्य-भोग-भूमिज-मनुष्य सम्बन्धी केश के अग्रभाग का प्रमाण कितना होता है?

उत्तर मध्यम-भोग-भूमिज-मनुष्य सम्बन्धी केश के अग्रभाग से आठ गुने प्रमाण जघन्य-भोग-भूमिज-मनुष्य सम्बन्धी केश के अग्र भाग का प्रमाण होता है।

प्र. 500 मध्यम-भोग-भूमिज-मनुष्य सम्बन्धी केश के अग्र-भाग का प्रमाण कितना होता है?

उत्तर उत्तम-भोग-भूमिज-मनुष्य सम्बन्धी केश के अग्र-भाग से आठ गुने प्रमाण मध्यम-भोग-भूमिज-मनुष्य सम्बन्धी केश के अग्र-भाग का प्रमाण होता है।

प्र. 501 उत्तम-भोग-भूमिज-मनुष्य सम्बन्धी केश के अग्र-भाग का प्रमाण कितना होता है?

उत्तर आठ रथरेणु मिलकर एक उत्तम भोग-भूमिज-मनुष्य सम्बन्धी केश के अग्रभाग का प्रमाण होता है।

प्र. 502 रथरेणु का प्रमाण कितना है?

उत्तर आठ त्रस-रेणु का एक रथरेणु होता है।

प्र. 503 त्रस-रेणु का प्रमाण कितना है?

उत्तर आठ त्रुटिरेणु का एक त्रस-रेणु होता है।

प्र. 504 त्रुटि-रेणु किसे कहते हैं?

उत्तर आठ संज्ञासंज्ञा का एक त्रुटि-रेणु होता है।

प्र. 505 संज्ञासंज्ञा किसे कहते हैं?

उत्तर आठ उत्संज्ञासंज्ञा मिलकर एक संज्ञासंज्ञा नामक स्कन्ध होता है।

प्र. 506 उत्संज्ञासंज्ञा किसे कहते हैं?

उत्तर अनन्तानंत परमाणुओं के संघात (मिलने) से एक उत्संज्ञासंज्ञा नामक स्कन्ध उत्पन्न होता है।

प्र. 507 उत्सेधांगुल से क्या-क्या मापा जाता है?

उत्तर उत्सेधांगुल से देव, नारकी, मनुष्य और तिर्यञ्चों के शरीर की ऊँचाई, देवों के निवास स्थान तथा नगरादि और अकृत्रिम जिनालयों की प्रतिमाओं की ऊँचाई मापी जाती है।

प्र. 508 प्रमाणांगुल किसे कहते हैं?

उत्तर उत्सेधांगुल से पाँच सौ गुना प्रमाणांगुल होता है। यही अवसर्पिणी काल के प्रथम चक्रवर्ती भरत का आत्मांगुल होता है। उस समय उसी आत्मांगुल से ग्राम, नगर आदि का माप किया जाता था।

प्र. 509 प्रमाणांगुल से क्या-क्या मापा जाता है?

उत्तर प्रमाणांगुल से द्वीप, समुद्र, कुलाचल, वेदी, नदी, कुण्ड, सरोवर और भरत आदि क्षेत्रों का माप प्रमाणांगुल से ही होता है।

प्र. 510 आत्मांगुल किसे कहते हैं?

उत्तर भरत और ऐरावत क्षेत्र में जिस-जिस काल में जो मनुष्य हुआ करते हैं उस-उस काल में उन्हीं मनुष्यों के अंगुल का नाम आत्मांगुल है।

प्र. 511 आत्मांगुल से क्या-क्या माप किया जाता है?

उत्तर झारी, कलश, दर्पण, भेरी, शय्या, गाड़ी, हल, मूसल, अस्त्र, सिंहासन, चवँर, छत्र, मनुष्य के निवास स्थान, नगर, उद्यान आदिक का माप अपने-अपने समय के आत्मांगुल से होता है।

प्र. 512 योजन किसे कहते हैं?

उत्तर चार कोस का एक योजन होता है। अथवा दो हजार धनुष का एक योजन होता है।

प्र. 513 योजन से क्या-क्या मापा जाता है?

उत्तर इस योजन के द्वारा जीवों के शरीर, नगर, मंदिर आदि को मापा जाता है।

प्र. 514 महायोजन किसे कहते हैं?

उत्तर दो हजार कोस का एक महायोजन होता है।

प्र. 515 महायोजन से क्या-क्या मापा जाता है?

उत्तर महायोजन से पर्वत, द्वीप, समुद्र आदि को मापा जाता है।

प्र. 516 एक धनुष का प्रमाण कितना होता है?

उत्तर चार हाथ का एक धनुष होता है।

प्र. 517 एक हाथ का प्रमाण कितना होता है?

उत्तर दो वितस्ति का एक हाथ होता है।

प्र. 518 एक वितस्ति (बालिश्त) का प्रमाण कितना होता है?

उत्तर दो पाद की एक वितस्ति होती है।

प्र. 519 एक पाद का प्रमाण कितना होता है?

उत्तर छै अंगुल का एक पाद होता है।

प्र. 520 जगच्छ्रेणी (जगत्-श्रेणी) किसे कहते हैं?

उत्तर पल्य के अर्द्धच्छेदों के असंख्यातवें भाग प्रमाण घनांगुल को रखकर उन्हें परस्पर में गुणा करने पर जो राशि उत्पन्न हो उसे जगच्छ्रेणी कहते हैं। वह राशि सात राजु लम्बी आकाश के प्रदेशों की पंक्ति प्रमाण जानना चाहिए।

प्र. 521 जगत्प्रतर या प्रतरलोक किसे कहते हैं?

उत्तर जगच्छ्रेणी के वर्ग को अर्थात् जगत्श्रेणी को जगत् श्रेणी से गुणा करने पर जो प्रमाण हो उसे जगत्-प्रतर या प्रतरलोक कहते हैं। वह जगत्प्रतर; जगच्छ्रेणी प्रमाण लम्बे और चौड़े क्षेत्र में जितने प्रदेश आयें उतना जानना चाहिए।

प्र. 522 घनलोक किसे कहते हैं?

उत्तर जगत्-श्रेणी के घन को लोक अथवा घनलोक कहते हैं। वह घनलोक जगत् श्रेणी प्रमाण लम्बे, चौड़े और ऊँचे क्षेत्र में जितने प्रदेश आयें उतना जानना चाहिए।

प्र. 523 राजू किसे कहते हैं?

उत्तर जगत् श्रेणी के सातवे भाग को राजू कहते हैं।

प्र. 524 राजू की उपमा क्या है?

उत्तर मान लीजिये कि एक हजार किलो वजन वाला लोहे का गोला स्वर्ग लोक से छोड़ा जावे (गिराया जावे) और वह गोला छह माह तक जहाँ तक की दूरी तय करे उतने क्षेत्र प्रमाण को एक राजू जानना चाहिए। ऐसे चौदह राजू प्रमाण लोक होता है।

सम्यग्ज्ञान भूषण पदवी हेतु पंचम प्रश्न पत्र

समय : .3.. दिन | अंक : 100

❖ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं। ❖ सभी प्रश्नों के उत्तर लाइन वाले पेपर्स पर पेरा बनाकर लिखें। ❖ उत्तर राष्ट्र-भाषा हिन्दी में ही लिखें। ❖ उत्तर लिखकर काटे जाने या घिसे जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

प्र.1. योजन किसे कहते हैं?
प्र. 2. अंगुल के प्रकार बताइये?
प्र. 3. सागरोपम और सागर किसे कहते हैं?
प्र. 4. राजू की उपमा क्या है?
प्र. 5. पल्य के कितने भेद हैं?
प्र. 6. युग किसे कहते हैं?
प्र. 7. पूर्व किसे कहते हैं?
प्र. 8. अन्तर्मुहूर्त्त किसे कहते हैं?
प्र. 9. अर्धपुद्गल परिवर्तन काल को अनन्त क्यों कहा है?
प्र.10. संख्यात, असंख्यात और अनन्त के उदाहरण क्या हैं?
प्र.11. समय किसे कहते हैं?
प्र.12. घन क्षेत्र फल किसे कहते हैं?
प्र.13. व्यास या परिधि किसे कहा जाता है?
प्र.14. घनमूल किसे कहते हैं?
प्र.15. वर्गमूल क्या कहलाता है?
प्र.16. परिकर्माष्टक किन्हें बोलते हैं?
प्र.17. गुणकार किसे कहते हैं?
प्र.18. भागहार किसे कहा जाता है?
प्र.19. करणानुयोग का लक्षण क्या है?
प्र.20. लोक और अलोक किसे कहा जाता है?

आधार : आचार्यश्री आर्जवसागर विरचित- 'आगम-अनुयोग', (प्रश्नोत्तर प्रदीप)

प्रश्न पत्र के पूर्व में दिये गये प्रश्नोत्तरों को पढ़कर उनका चिंतवन-मंथन कर उत्तर-पुस्तिका की पूर्ति करें।

परीक्षार्थी परिचय

नाम..... उम्र .....
पिता/माता/पति का नाम .....
पता .....
.....
मोबाईल/फोन नं. .....

सम्यग्ज्ञान भूषण पदवी हेतु शिविर का आयोजन

आगम अनुयोग प्रश्नोत्तर प्रदीप

मंगल आशीर्वाद एवं प्रेरणा- आचार्य गुरुदेव श्री आर्जवसागर जी महाराज

सम्यग्ज्ञान भूषण पदवी हेतु शिविर का आयोजन

आगम अनुयोग प्रश्नोत्तर प्रदीप

दिनांक- 3 मई से 2 जून 2022 तक

पावन प्रेरणा- आचार्य गुरुदेव श्री आर्जवसागर जी महाराज

इस शिविर में भाग लेने वाले सभी उत्तीर्ण प्रतियोगीयों को प्रमाण पत्र भी दिया जाएगा।

प्रथम द्वितीय तृतीय स्थान पर आने वाले प्रतियोगियों को सम्यग्ज्ञान भूषण पदवी से एवं आकर्षक पुरुस्कार से भी अलंकृत किया जाएगा।

- आगम अनुयोग पुस्तक की pdf आप तक whatspp के माध्यम से पहुँचा दी जाएगी।अथवा आप www.aarjavvani.com वेबसाइट से भी डाऊनलोड कर सकते हैं।
- पुस्तक के अंत में कुल 10 पेपर दिए गए हैं। जिनके उत्तर आपको उसी पुस्तक में से देखकर लिखना है।
- प्रत्येक 100 प्रश्नों में से 1 प्रश्न पत्र तैयार किया गया है।इस तरह 100 प्रश्नों में से लिखने होंगे 20 प्रश्नों के उत्तर
- इस तरह लिखने होंगे करीब 1000 प्रश्नों में से 200 प्रश्नों के उत्तर
- इस शिविर में भाग लेने हेतु नीचे लिखे नंबर पर 2 मई तक सूचना दे देवें।
- आपको आर्जव वाणी प्रतियोगिता ग्रुप में जोड़ दिया जाएगा। जिससे आपको इस शिविर संबंधी सभी जानकारी/ अपडेट मिलती रहेगी।

प्रतियोगिता का उद्देश्य शास्त्र स्वाध्याय द्वारा ज्ञान के क्षयोपशम में वृद्धि करना होता है। इसलिए आगे भी ऐसे ही स्वाध्याय करते रहें और प्रतियोगिता के विजेता बनें।

9174843674

- प्रत्येक 3 दिन में 1 प्रश्न पत्र के उत्तर लिखकर भेजना होंगें। इस तरह 30 दिन में 10 प्रश्न पत्र लिखना होंगें।
- आप इस प्रश्नपत्र को रजिस्टर के पेपर में लिखकर pdf के माध्यम से whatspp पर भी भेज सकते हैं।

नोट- 13 वर्ष से ऊपर आयु वाले प्रतियोगी ही भाग ले सकते हैं। व पेपर भेजने की समय सीमा को ध्यान में रखना आवश्यक होगा।

सम्यग्ज्ञान भूषण पदवी हेतु शिविर का आयोजन

आगम अनुयोग प्रश्नोत्तर प्रदीप

मंगल आशीर्वाद एवं प्रेरणा- आचार्य गुरुदेव श्री आर्जवसागर जी महाराज

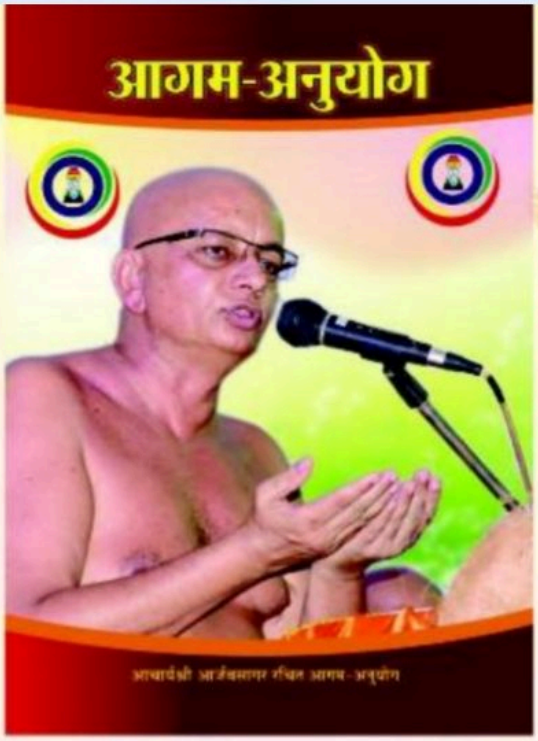

बहुमूल्य कृति : आगम-अनुयोग

'आगम-अनुयोग' एक ऐसी अनूठी, अद्वितीय (unique) कृति है; जिसमें जैन धर्म के चारों अनुयोगों का सार समाहित है। यह बहुमूल्य कृति पाठशालाओं एवं सामूहिक स्वाध्याय के लिये अत्यंत मूल्यवान एवं बहुपयोगी है। इस कृति में जैनधर्म की लोक-अलोक की विस्तृत जानकारी का समावेश है। 'आगम-अनुयोग' प्रश्नोत्तर प्रदीप कृति रूप में अत्यंत सरल शब्दों में आगम को सम्यग्ज्ञान वर्धिनी होकर कल्याणकारी रूप मोक्ष रूपी शिवालय को प्राप्त करने में नौका सदृश है।

इसके स्वाध्याय के माध्यम से भव्य लोग सम्यग्ज्ञान-भूषण सिद्धांत भूषण पदवी को भी प्राप्त कर सकते हैं।

प्रतियोगिता का उद्देश्य शास्त्र स्वाध्याय द्वारा ज्ञान के क्षयोपशम में वृद्धि करना होता है। इसलिए आगे भी ऐसे ही स्वाध्याय करते रहें और प्रतियोगिता के विजेता बनें।

दिनांक- 3 मई से 2 जून 2022 तक

आयोजक- गुरु आर्जव वाणी एवं भाव विज्ञान परिवार, भोपाल